ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(3): 33-35
www.allresearchjournal.com
Received: 18-01-2024
Accepted: 25-02-2024

अनामिका गुप्ता
शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, सम्बद्ध डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश भारत

Corresponding Author:
अनामिका गुप्ता
शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, सम्बद्ध डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश भारत

ग्रामीण महिलायें एवम् स्वयं सहायता समूहः साहित्य की समीक्षा

अनामिका गुप्ता

सारांश
स्वयं सहायता समूह 10–20 लोगों द्वारा बनाया एक स्वैच्छिक संगठन है जिसमें सम्मिलित होकर ग्रामीण महिलायें छोटी–छोटी बचत करके बैंक से जुड़कर सूक्ष्मऋण प्राप्त कर विभिन्न प्रकार के सूक्ष्म उद्योग स्थापित करके आत्मनिर्भर बन रही हैं, इसमें नाबार्ड प्रमुख भूमिका निभा रहा है। नाबार्ड (2021) की रिपोर्ट के अनुसार भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 64.78 लाख स्वयं सहायता समूह (N.R.L.M. के अन्तर्गत) बैंक से जुड़े तथा उनके सदस्यों द्वारा 19353.70 करोड रूपये की बचत की गई। ग्रामीण महिलायें समूह के माध्यम से अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर स्वास्थ्य, शिक्षा तथा अन्य पारिवारिक समस्याओं का समाधान कुशलतापूर्वक कर रही है जिससे समाज में उन्हें एक नई पहचान मिल रही है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य स्वयं सहायता समूह से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता को प्रदर्शित करना है, जिसके लिए द्वितीयक स्त्रोतों का उपयोग किया गया है।

कूटशब्द : ग्रामीण महिलायें, स्वयं सहायता समूह, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, जागरूकता

प्रस्तावना
महिलायें परिवार की वह धुरी होती हैं जिस पर सम्पूर्ण परिवार का अस्तित्व निर्भर करता है। परिवार का सहयोग प्राप्त कर महिलायें पुरूष से कदम से कदम मिलाते हुए राष्ट्र के विकास में अग्रसर हो सकती हैं परन्तु समाज की पितृसत्तात्मक विचारधारा ने महिलाओं को विकास पथ से वंचित कर दिया है। महिलाओं का आर्थिक रूप से पुरूषों पर निर्भर होना उनकी निम्न स्थिति का कारण है। शहरी महिलाओं की स्थिति फिर भी ठीक है जबकि ग्रामीण गरीब महिलाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। ग्रामीण समाज की रूढ़िवादी सोच एवं शैक्षिक अभाव के कारण महिलायें अपने अधिकारों का लाभ नहीं उठा पाती, महिलाओं द्वारा किये गए श्रम का भी उन्हें आर्थिक लाभ प्राप्त नहीं होता जिससे वे सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रों में बहुत पिछड़ गई हैं। ग्रामीण महिलाओं को सामाजिक तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वयं सहायता समूहों को गठित करने की पहल की गई।

स्वयं सहायता समूह समान सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले 10–20 लोगों का एक स्वैच्छिक संगठन है जो अपनी गरीबी दूर करने हेतु सामूहिक रूप से अपनी आमदनी से थोड़ी–थोड़ी बचत करते हैं तथा बचत के माध्यम से बैंक से जुड़कर सूक्ष्मऋण प्राप्त कर अपने जीवन की दशा को सुधारते हैं। स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को उच्च करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इनसे जुड़ने के पश्चात् ग्रामीण महिलायें समाज में न केवल आर्थिक रूप से बल्कि व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन में भी स्वावलम्बी होने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

स्वयं सहायता समूह की अवधारणा को भारत में आर्थिक उदारीकरण (1991–92) के दौरान विशेष प्रोत्साहन मिला, जिसमें नाबार्ड की प्रमुख भूमिका रही। नाबार्ड के द्वारा सर्वप्रथम निर्धन व्यक्तियों के 500 समूहों को वित्तीय संस्थाओं के साथ जोड़ने की प्रायोगिक परियोजना के रूप में शुरू किया गया। यह बैंको, सरकारी एजेन्सियों तथा गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण, अन्य जीविका सम्बन्धी कार्यक्रमों का संचालन तथा समूहों को बैंक से जोड़कर ऋण प्रदान करने का कार्य करता है। नाबार्ड (2021) की रिपोर्ट के अनुसार भारत के ग्रामीण क्षेत्र में 64.78 लाख स्वयं सहायता समूहों (N.R.L.M.के अन्तर्गत) बैंक से जुड़कर 19353.70 करोड़ रूपये की बचत की है।

उद्देश्य
1. स्वयं सहायता समूह से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

2. स्वयं सहायता समूह के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं में स्वास्थ्य, शिक्षा व अधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

शोध पद्धति – प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक स्त्रोतों जैसे –पुस्तकें, शोध–पत्र, सरकारी रिपोर्ट, इन्टरनेट आदि पर उपलब्ध साहित्य का उपयोग किया गया है।

Jatin Pandey, Rini Roberts (2012) [9] ने चमाराजगंज जिले के गालीपुरा गांव के 3 स्वयं सहायता समूहों की 8 महिलाओं का अध्ययन किया और पाया कि स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए सूक्ष्म ऋण प्रदान करता है। इस सूक्ष्म ऋण के द्वारा महिलाएँ अपने व्यवसाय को बढाती हैं। ज्यादातर गरीब महिलाएँ सूक्ष्मऋण प्राप्त कर उसका उपयोग पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति, व्यवसाय जैसे – कैन्टीन, कैटरिंग, टेलरिंग इत्यादि में करती हैं। महिलाएँ पारिवारिक निर्णयों तथा सामाजिक क्रियाकलापों में पूर्ण सहभागिता निभाती है तथा गांव या उससे बाहर के क्षेत्र तथा रिश्तेदारों के घर आने जाने के लिए स्वतंत्र हैं।

S. Ravi, Dr. P. Vikkraman (2012) [13] ने द्वितीयक स्त्रोतों पर उपलब्ध आंकड़ों का अध्ययन कर पाया कि स्वयं सहायता समूह महिला सशक्तिकरण तथा गांव के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। स्वयं सहायता समूह से जुड़ने वाली गरीब महिलाओं की संख्या लगातार बढ रही है। ये महिलायें बैंक तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं से ऋण प्राप्त करने तथा बचत करने में सक्रिय हैं। अध्ययन में स्पष्ट हुआ कि स्वयं सहायता समूह की कार्यप्रणाली समाज में गरीब और कमजोर महिला समुदाय के लिये बहुत उपयुक्त साबित हुई है।

Dr. Anshuman Sahoo (2013) [14] ने कटक जिले के स्वयं सहायता समूहों की 150 महिलाओं का अध्ययन किया और पाया कि समूह से जुड़ने के बाद महिलाओं की आय में वृद्धि हुई है। महिलाएँ प्राप्त सूक्ष्म ऋण का उपयोग व्यवसाय, व्यक्तिगत उपयोग, कृषि कार्य, चिकित्सा, गृह–निर्माण आदि कार्यों में करती हैं। समूह के द्वारा उनमें बचत करने की आदत भी विकसित हुई है। महिलाओं का मानना है कि समूह में आने के बाद वे न सिर्फ घरेलू बल्कि बाहरी निर्णय लेने में भी सक्षम हुई है।

Dr. Poonam Parihar, Rakesh Nanda (2013) [10] ने जम्मू कश्मीर के स्वयं सहायता समूह की 250 महिला सदस्यों तथा 250 उन महिलाओं जो कि किसी भी स्वयं सहायता समूह की सदस्य नहीं थी का तुलनात्मक अध्ययन निर्णय लेने के पहलू के सम्बन्ध में किया और पाया कि स्वयं सहायता समूह की महिलाओं में अधिकारों के प्रति जागरूकता, व्यक्तिगत एवं पारिवारिक निर्णय लेने की क्षमता, बैंक में लेन–देन सम्बन्धी प्रक्रिया में सक्षमता, बचत करने की आदत उन महिलाओं से अधिक पायी गयी जो स्वयं सहायता समूह की सदस्य नहीं थी।

Kappa Kondal (2014) [5] ने आन्ध्रप्रदेश के गजबेल मण्डल के स्वयं सहायता समूहों की 100 महिलाओं का अध्ययन किया और पाया कि समूह से जुड़ने के बाद महिलाओं के जीवन में नए बदलाव आये है। वे आर्थिक रूप से मजबूत हुई है जिससे उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ। स्वयं सहायता समूह से उन्हें अन्य लाभकारी योजनाओं, कार्यक्रमों लोन, स्कीम आदि की जानकारी प्राप्त होती है।

Dr. Jyothi Kalyanrao Heggani, Dr. Sindhe Jaganath R (2014) [4] ने 21वीं शताब्दी में प्रकाशित कुछ चयनित जर्नल को अध्ययन का आधार बनाया और पाया कि स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाओं का सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण हो रहा है। समूह से जुड़ने के पश्चात् महिलाओं में बचत करने की आदत तथा पारिवारिक निर्णय लेने की क्षमता का विकास हुआ है। आर्थिक रूप से सशक्त होने से वे अपनी आवश्यकताओं के लिए अन्य पारिवारिक पुरूष सदस्यों पर निर्भर नहीं है। महिलाओं में शिक्षा का स्तर बढ़ने से वे अपने अधिकारों के प्रति भी जागरूक हुई है।

Dr. R. Radhika Devi (2014) [11] ने मदुरई जनपद के स्वयं सहायता समूहों की 200 महिला सदस्यों का अध्ययन किया और पाया कि सूक्ष्मवित्त ने महिलाओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। स्वयं सहायता समूह ने गरीब महिलाओं के जीवन को बेहतर बनाया है जिससे वे परिवार को जीविका के बेहतर साधन प्रदान कर सकीं हे। वित्तीय सुरक्षा प्राप्त होने से महिलाएँ आत्मनिर्भर बनकर समुदाय के विकास में योगदान कर रही हैं।

Tripti Kumari, Anand Prasad Mishra (2015) [15] ने वाराणसी जनपद के स्वयं सहायता समूहों की महिला सदस्यों का अध्ययन कर पाया कि स्वयं सहायता समूह गरीब महिलाओं को ऐसा मंच प्रदान करता है जिसमें वे अपनी क्षमताओं का विकास कर स्वयं को सशक्त करती है। समूह की प्रेरणा के माध्यम से महिलाए परम्परागत कौशलों जैसे – बुनाई, अचार बनाना, सिलाई, खाना बनाना आदि की ओर उत्कृष्ठ होती है। आर्थिक रूप से सक्षम होने से महिलाओं में आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भरता की भावना उत्पन्न होती है जिससे उन्हें परिवार तथा समाज में सम्मान प्राप्त होता है।

Prof. Nandini R., Prof. Sudha N. (2016) [8] ने कर्नाटक के रामनगर जिले के 20 स्वयं सहायता समूहों की 50 महिला सदस्यों का अध्ययन किया और पाया कि स्वयं सहायता समूहों का महिला सशक्तिकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। समूह से जुड़ने के बाद महिलाओं में बचते करने की आदत, आय में बढोत्तरी, स्व रोजगार, सम्पत्ति निर्माण, ऋण वापसी तथा निर्णय लेने के कौशल का विकास हुआ है। जिससे उनमें सामाजिक समझ, आत्मविश्वास तथा अधिकारों के प्रति जागरूकता का विकास हुआ है।

Uttam Singh (2017) [15] में हिमाचल प्रदेश के मण्डी जिले की स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी 100 महिलाओं का अध्ययन किया और पाया कि समूह से जुडने के पश्चात् महिलाओं की साहूकारों पर से निर्भरता कम हुई है। महिलाएँ बैंक के लेन–देन से भलीभांति परिचित हो चुकी है तथा बैंक से प्राप्त सूक्ष्म ऋण से खुद का व्यवसाय कर रही है जिससे वे आर्थिक रूप से सशक्त हो रही है। स्वयं सहायता समूह ने महिलाओं को बचत करना सिखाया परन्तु अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि समूह में महिलाओं के कौशल को विकसित करने के लिए कोई प्रोग्राम नहीं चलाये जाते। महिलाओं में बेहतर नेतृत्व तथा समाज में उचित बातचीत करने का कौशल नहीं है। महिलाएँ किसी भी निर्णय के लिए पूर्ण रूप से पुरूषों पर निर्भर हैं।

Kiran Rana, Ansari M.A. (2017) [12] ने देहरादून के दो ब्लॉक विकास नगर तथा सहसपुर के स्वयं सहायता समूहों की 198 महिलाओं का अध्ययन किया और पाया कि समूह की महिलाएँ ज्यादा से ज्यादा बचत करना चाहती है। स्वयं सहायता समूह ग्रामीण गरीब महिलाओं की गरीबी दूर करने तथा उनके सशक्तिकरण में सहायक सिद्ध हुआ है। आय बढ़ने से महिलाएँ पारिवारिक खर्चों में भी व्यय करने लगी है तथा उनमें निर्णय लेने की क्षमता तथा आत्मनिर्भरता का विकास हुआ है। जिसके परिणाम स्वरूप परिवार में उनको सम्मान प्राप्त हुआ है।

Dr. M. Nandhini et al (2017) [7] ने कोयम्बटूर जिले के स्वयं सहायता समूहों की 150 महिला सदस्यों का अध्ययन किया और पाया कि समूह से जुड़ने के बाद महिलाओं की आय में बढोत्तरी हुई, जिससे व घरेलू खर्चों के निर्वहन में अपनी सहभागिता निभा रही है। पारिवारिक व्यय अधिक होने से उनमें बचत करने की प्रक्रिया धीमी पाई गई। समूह के सदस्यों में ऋण वापसी की दर उच्च पाई गई जिससे उनमें आत्मविश्वास तथा आत्मसम्मान की भावना विकसित हुई।

Rachit Gupta, Shalini Aggarwal (2017) [3] ने उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जनपद के स्वयं सहायता समूहों की 150 महिलाओं

का अध्ययन किया और पाया कि स्वयं सहायता समूहों ने महिला सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभाई है। समूह से जुड़ने के बाद महिलाए बचत करने का ढंग, सम्पत्ति निर्माण, बैंक के लेन–देन, ऋण वापसी तथा आय को बढ़ाने सम्बन्धी गतिविधियों से भलीभाँति परिचित हुई हैं। महिलाओं में सामाजिक जागरूकता, सहयोग की भावना, नेतृत्व क्षमता, आत्म–विश्वास तथा तार्किक और विश्लेषणात्मक चिन्तन भी पाया गया। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि महिलाओं को पारिवारिक बैंक, प्रशिक्षण तथा समूह के गठन आदि से सम्बन्धित समस्याएं भी आती है।

Arup Ghosh (2020) [1] ने द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से भारत के 6 उत्तरपूर्वी राज्यों के महिला स्वयं सहायता समूहों पर किये गये अध्ययन का विश्लेषण किया और पाया कि स्वयं सहायता समूहों ने महिला सशक्तिकरण में केन्द्रीय भूमिका निभाई है। ग्रामीण महिलाएँ व्यवसाय द्वारा कमाये गए धन का उपयोग बच्चों की शिक्षा, उनकी आवयश्यकताओं तथा परिवार की अन्य जरूरतों को पूरा करने में करती है। समूह से जुड़ने के बाद महिलाओं के रहन–सहन की आदतों में पूर्व की तुलना में परिवर्तन आया है।

Alka Gupta, Dr. Lalit Chaudhary (2020) [2] ने प्राथमिक आंकड़ों से जौनपुर के 90 स्वयं सहायता समूहों तथा द्वितीयक आंकडों का अध्ययन किया और पाया कि जौनपुर में स्वयं सहायता समूहों के विकास में वृद्धि हुई है। इनके द्वारा महिलाओं तथा अन्य कमजोर वर्गों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में उत्थान, समाज में भागीदारी, गतिशीलता, जागरूकता आदि को बढ़ाया जा सकता है।

निष्कर्ष

सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़कर ग्रामीण महिलाओं के जीवन को एक नई दिशा प्राप्त हुई है। (ग्रामीण महिलायें समूह के सहयोग से सूक्ष्म उद्योग स्थापित कर स्वयं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति बेहतर कर परिवार के संचालन में सहयोग प्रदान कर रही हैं जिससे परिवार में उन्हें उचित स्थान प्राप्त हुआ है।)

समूह में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा महिलायें स्वास्थ्य, शिक्षा व अधिकारों के प्रति जागरूक होकर निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्षम हुई है जिससे उनमे आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ है।

संदर्भ

1. Ghosh A. Women Empowerment Through Self Help Groups in North Eastern Indian States. A Global Journal of Social Sciences. 2020;3(2):1-7. Impact Factor: SJIF-4.998, IIFS-4.375.
2. Gupta A, Chaudhary L. Study on Rural Women Empowerment through Self Help Groups. International Journal of Scientific Progress & Research. 2020;69(169):1-8. ISSN No. 2349-4689.
3. Gupta R, Aggarwal S. A Study On Women Empowerment Through Self Help Groups with Special Reference Ghaziabad in Uttar Pradesh District. International Journal of Sciences of Applied Research; c2017. p. 32-38.
4. Heggani JK, Sindhe JR. Women Empowerment through Self–Help Groups: A Review of Literature. Indian Journal of Applied Research. 2014;4(4):1-4.
5. Kondal K. Women Empowerment Through Self Help Groups In Andhra Pradesh India. International Research Journal of Social Sciences. 2014;3(1):13-16.
6. Kumari T, Mishra AP. Self Help Groups (SHGs) and Women's Development: A Case Study of Varanasi District. Space and Culture. India; c2015.
7. Nandhini M, Usha M, Palanivelu P. Women Empowerment through Self Help Groups: A Study in Coimbatore District. International Journal of Research in Finance & Marketing. 2017;7(4):36-43. Impact Factor: 6.397.
8. Nandini R, Sudha N. A Study On Women Empowerment Through Self Help Groups with Special Reference to Ramnagar District Karnataka. BIMS International Journal of Social Science Research; c2016. ISSN 2455-4839.
9. Panday J. A Study on Empowerment of Rural Women through Self Help Groups. National Monthly Refereed Journal of Research in Commerce & Management. 2012;1(8):1-6.
10. Parihar P, Nanda R. Impact of Self Help Groups on Rural Women. International Journal of Commerce & Business Management. 2013;6(1):1-6.
11. Radhika Devi R. A Study on Women Empowerment Through Self Help Groups In Madurai District. Shantax International Journal of Commerce. 2014;2(2):1-5.
12. Rana K, Ansari MA. Self Help Groups & Women Empowerment: A Study on Some Selected SHGs in Dehradoon District. International Journal of Current Science & Technology. 2017;5(12):1-5.
13. Ravi S, Vikkraman P. The Growth of Self Help Groups in India: A Study. Indian Journal of Applied Research; c2012, 1(7). ISSN No. 2249-555X.
14. Sahoo A. Self Help Groups & Women Empowerment: A Study Some Selected SHGs. International Journal of Business & Management Invention. 2013;2(9):54-61.
15. Singh U. Self Help Groups And Women Empowerment: Appraisal of Drang Block In Mandi District of H.P. Management Insight – The Journal of Incisive Analysers. 2017;13(1):45-53. Vol XIII. No 1.
16. Nabard Report. 2021.
17. NABARD Website. www.nabard.org.
18. Wikipedia Website. www.wikipedia.org.